5

ज्ञान सृजन के लिए अध्यापन

चित्रा सिंह*

आज यह बुनियादी सवाल उठाना ज़रूरी है कि विशाल भारतीय समाज को किस प्रकार की शिक्षा की ज़रूरत है। यह भी कि हमारी शिक्षा संबंधी अवधारणा क्या है? यह ज्ञान और बोधमूलक होगी या सिर्फ़ सूचनामूलक और स्मृतिपरक? क्या शिक्षा का कोई संबंध व्यक्ति या समूहों के चरित्र से भी है या यह एक कौशल मात्र है? क्या यह शिक्षा मनुष्यता का विकास कर पा रही है? यह भी सोचा जाना चाहिए कि शिक्षा के केंद्र में विद्यार्थी हो न कि वह व्यवस्थागत सोच। शिक्षा के केंद्र में उस शिक्षक-कुल को होना चाहिए जो अपने शिक्षार्थियों के प्रति स्नेहशील और शिक्षा के राष्ट्रीय चरित्र की अपेक्षित मर्यादाओं के प्रति स्वयं को उत्तरदायी मानता हो। स्कूलों को शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच का मामला मान कर आज़ाद किया जाना चाहिए।

डॉ. रामविलास शर्मा ने एक साक्षात्कार में कहा था कि बदलाव के लिए शिक्षा ही एक मात्र रास्ता है पर आज शिक्षा का मतलब ज्ञान की किसी शाखा को जानना भर है । विद्यार्थी और शिक्षक के संबंध अब व्यावसायिक हो गये हैं। अब न तो शिक्षक अपने विद्यार्थी को जाँचता है न विद्यार्थी अपने शिक्षक को। कक्षा में शिक्षक चूँकि अव्यक्त रह जाता है इसलिए विद्यार्थी भी जीवन की तमाम परीक्षाओं में व्यक्त नहीं हो पाता। व्यक्ति का अर्थ होता है व्यक्त होना। व्यक्त करने और होने की इस खोई हुई कला को खोजना भी आज की शिक्षा की चुनौती है। आज हमें ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना होगा जो स्थानीयता की दुश्मन न हो और सार्वदैशिक कसौटियों पर भी खरी उतरे। इसके लिए सबसे ज़रूरी है शिक्षा का स्वदेशी ढाँचा जिसमें स्थानीय विविधता की झलक हो।

शिक्षा व्यवस्था पर सोचते हुए विद्यार्थी के जन्मजात स्वभाव और सहज रुचि का खयाल रखना ज़रूरी है। बुनियादी अथवा प्राथमिक शिक्षा के दौरान ही विद्यार्थी की रुचियों और स्वभाव का पता लगाया जाना चाहिए, बजाय यह तय करने के कि अमुक विद्यार्थी क्या बनना चाहता है। आज हमारी शिक्षा प्रणाली का यह सबसे अहम दोष यही है। वह दिन कब आयेगा जब हमारे विद्यार्थी स्वयं यह सोचने लगेंगे कि उन्हें कैसी पढ़ाई की ज़रूरत है? उन्हें कैसा शिक्षक चाहिए? और वह किताब कौन-सी हो जो उन्हें ज्ञान तो दे ही अपने आसपास के प्रति मानवीय होना भी सिखाए। ज़्यादातर विद्यार्थी गलत विषय-समूह चुनते

* *प्राध्यापक*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

हैं और ज़िंदगीभर रुचि और जानकारी के परस्पर द्वंद्व से ग्रस्त रहते हैं, उनका अस्तित्व व्यक्तिहीनता का शिकार होकर मानव-संसाधन भर शेष रह जाता है।

कक्षा में शिक्षक की उपस्थिति बहुआयामी होती आयी है। केवल परीक्षा में आने वाले प्रश्नों पर विचार करना और सफ़लता की ओर विद्यार्थियों को मोड़ देना ही शिक्षक का कार्य नहीं है। वह कोई परीक्षा उपयोगी मंत्र या तंत्र नहीं है। वह मात्र किताब या सूचना-कुंड भी नहीं है। शिक्षक को कक्षा में निरंतर नयी ऊर्जा और नये प्राण का संचार करते रहना है। शिक्षक की योग्यता ईमानदारी व परिश्रम से पढ़ाना, छात्रों को बौद्धिक स्तर पर सजग करना और उनकी तर्क-शक्ति को प्रखर बनाना है। समाज को अगर अच्छा शिक्षक चाहिए तो उसे स्वाधीनता और स्वतंत्रता देनी होगी। उसकी सत्ता को समझना होगा।

जो शिक्षक अन्वेषण, पुस्तक लेखन और नये-नये प्रश्नों से बचने के खयाल में जुटे रहते हैं वे विद्यार्थियों का भविष्य सुनिश्चित नहीं कर सकते। शिक्षक वह है जिसकी चिंता परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों से कहीं अधिक उन प्रश्नों में होती है जो जीवन में पूछे जाने वाले हैं विद्यार्थी ऐसा ज्ञान चाहते हैं जिसे शिक्षक ने बरसों के अपने अध्यापन अनुभव से प्राप्त किया हो। एक शिक्षक को निरंतर सीखते रहने की कोशिश करते रहना चाहिए। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था — *"अगर अध्यापक खुद नहीं पढ़ रहा है तो पढ़ा भी नहीं सकता।"*

शिक्षक के रूप में हमें तय करना होगा कि हम सामानों और उपभोग्य वस्तुओं के पीछे नहीं बल्कि उन मूल्यों के पीछे दौड़ेंगे जो हमारे सामाजिक जीवन से निकाले और भुलाये जा चुके हैं। हमारा काम विद्यार्थी के जीवन में कुछ जोड़ना होना चाहिए, घटाना नहीं। हम अपनी कक्षा और विद्यार्थियों में डूबते और घुलते चले जाएँ जिससे उनके प्रश्न और जिज्ञासाएँ हमें सचेत करती रहें। हमारे सोचने का अभ्यास बढ़े। हम अपने विद्यार्थियों को प्रश्न करना सिखाएँ जिससे वे चीज़ों और विचारों को ज्यों का त्यों स्वीकार न करें बल्कि उनका तर्क की कसौटी पर कसकर निष्कर्ष निकालें। प्रश्न करना ज्ञान के विकास की कसौटी है।

शिक्षक का काम नये विचारों की तलाश करना भी है। शिक्षक का काम दिमागी ताकतों का विकास करना है। भारत में अगर गुरु की महिमा गाई गई है तो शायद इसलिए कि वह ज्ञान का साधक और उपासक तो है ही उसका जुझारू सिपाही और सिपहसालार भी कक्षा में किताबें खोलकर दिया जाने वाला व्याख्यान विद्यार्थी को सबसे ज़्यादा अविश्वसनीय लगता है। क्योंकि अधिकांश शिक्षक कक्षा में बगैर किसी तैयारी के जाने लगे हैं। शिक्षक कोई अलग इकाई नहीं है वह तो ज्ञान और सांस्कृतिक जीवन की एक कड़ी मात्र है। इस कड़ी के कमज़ोर हो जाने पर ज्ञान और संस्कृति की परंपरा कमज़ोर पड़ जाती है। विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र देने की ज़िम्मेदारी शिक्षक को ही मिलनी चाहिए। उसे अपनी ज़िम्मेदारी सँभालने का हक मिलना चाहिए जिससे वह समाज को कुछ ऐसे नागारिक दे पाए जो अलग से पहचाने जा सकें। हमारा विद्यार्थी हमारी योग्यता का प्रमाण पत्र खुद होगा।

कक्षा में शिक्षक का काम कुछ-कुछ ऐसा ही होता है जैसा कि रंगमंच पर एक सिद्धहस्त कलाकार का। *"ज्ञानवान होना उसकी बुनियादी ज़रूरत है पर*

Chapters- PS-July2016.indd 28 22-08-2017 AM 10:01:00

ज्ञान को परोसने की कला उसे नहीं आती तो ज्ञान की कुँजी भी बेकार हो जाती है।" इसलिए अध्यापन भी एक कला है जिसे साधना पड़ता है। इसका सबसे अच्छा तरीका है अपने छात्रों की मनोभूमि को पहचान कर उसमें धीरे-धीरे उतरने की कला। अपने शिक्षक को आत्मसात् कर सकने वाली कक्षाएँ ही सच्ची कक्षाएँ होती हैं। एक सच्चा शिक्षक ऐसी ही कक्षाओं के बल पर ज़िंदा रहता है, उसमें बीज की तरह उगने की ताकत होनी चाहिए क्योंकि विद्यार्थियों का चित्त ही वह जगह है जहाँ शिक्षक ज्ञान के बीजों का रोपण करता है। सबसे ज़्यादा ज़रूरी है कि शिक्षक ने क्या कुछ ऐसे प्रश्न सोच रखे हैं जो समूची कक्षा को नये सिरे से सचेत, उत्सुक और आतुर कर डालेंगे? शिक्षक शिक्षा के संसार का केंद्र है। वही है जिससे ज्ञान की परंपरा को गति मिलती है, वही है जिसका व्याख्यान विद्यार्थियों में स्फुरण पैदा करता है, वही है जिसकी उपस्थिति किताबों की तरह निर्जीव नहीं होती। उसे न केवल सजीव बल्कि कारगर व प्रभावशाली भी होना चाहिए। वह ज्ञान और आचार का स्रोत होता है तभी तो वह अपने विद्यार्थियों को प्रेरणा दे पाता है। विद्या का दान करते हुए शिक्षक को अपनी और अपने विद्यार्थियों की सीमाओं की खबर होनी चाहिए। इस दृष्टि से मुक्तता और सत्यता ज़रूरी है। विद्यार्थी का इम्तहान रोज़-रोज़ होना चाहिए, कुछ इस तरह कि वह इम्तहान न लगे। चलना-फिरना, उठना-बैठना, बातचीत, बहस व मुबाहसा, सहमति-असहमति के प्रश्न चलते रहें और विद्यार्थी विकास करता रहे। हमारे विद्यार्थियों को यह सुविधा भी मिलनी चाहिए कि वे एक-दूसरे के जवाब भी देख सकें।

कक्षा के भीतर शिक्षक के कर्म पर भी विचार ज़रूरी है। अपने विषय को जानना और संबंधित पाठ्यपुस्तक के अलावा अपनी कक्षा को कुछ नया देना, अपनी कक्षा को हर बार नयी और ताज़ी कक्षा में बदल देना, उसे एक सजग उत्सुक और नवोन्मेषकारी कक्षा में बदल देना एक अच्छे शिक्षक की पहचान है। शिक्षक विद्यार्थी को जन्म देने वाला भले ही न हो पर उसका सांस्कृतिक अभिभावक ज़रूर है। शिक्षक वह है जो केवल आचरण ही नहीं करता, कराता भी है। जिन प्रश्नों के उत्तर घिस-पिट गये हैं और जिनके उत्तर खोजे से भी नहीं मिल रहे हैं, उन प्रश्नों के उत्तर खोजता और नये उत्तर बनाता है।

शिक्षक का दूसरा अर्थ परंपरा को अविछिन्नता और पूर्णता प्रदान करना है। एक किसान जिस तरह अपने खेत के साथ पेश आता है, कुम्हार मिट्टी से, वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला से और वादक अपने वाद्य से जिस तरह का रिश्ता रखता है, वही शिक्षक का छात्र से होता है। शिक्षा केवल चीज़ों को जान लेना ही नहीं है, अलग-अलग और कठिन मौकों पर उस जानकारी का उपयुक्त और समर्थ उपयोग करना भी है। कोई भी छात्र अपने उन शिक्षकों के प्रति सच्ची श्रद्धा नहीं रखता जो केवल विषय को जानते हैं। प्राय: सभी छात्र ऐसे शिक्षकों के प्रति आकृष्ट होते हैं जो केवल जानकार ही नहीं होते बल्कि जानकारियों को अपने छात्रों के जीवन का बेजोड़ अनुभव बनाने में समर्थ होते हैं। छूने से चीज़ें और भी गंभीर, खूबसूरत और उपयोगी समझ में आने लगें तो हमारे छूने का मतलब है। सच्चा शिक्षक अपने छात्रों से इसी प्रकार का नाता रखता है। गुरु-शिष्य परंपरा वाले इस समाज

Chapters- PS-July2016.indd 29 22-08-2017 AM 10:01:00

में छात्र की पहचान उसके समूह से होनी चाहिए। शिक्षा के संस्थान अगर अपने विद्यार्थियों को अपनी पहचान का प्रतीक नहीं बना पाये तो उनका होना निरर्थक है।

कक्षा ही शिक्षक की वह खूबसूरत प्रयोगशाला है जहाँ सचमुच एक नयी और सुंदर दुनिया तैयार हो सकती है। विभिन्न रसायनों को प्रयोगशाला में कितनी स्वाधीनता प्राप्त होती है। वे सब अपने ढंग से प्रतिक्रिया करके एक-दूसरे में घुलते-मिलते हैं और तीसरे और चौथे रसायन को जन्म देते हैं। इसी तरह कक्षाओं को अब विचारों की प्रयोगशाला में बदला जाना चाहिए।

आज शिक्षा से सतत जिज्ञासा, कर्मपरक ज्ञान, विनय और कृतज्ञता बोध के मूल्य अगर लुप्तप्राय: हैं तो इसके कारणों पर जाना होगा। क्या सचमुच शिक्षक व्यक्तित्व एक शिक्षक का व्यक्तित्व है? क्या वे ज्ञान के सतत साधक हैं? क्या अपने विद्यार्थियों के प्रति उनका व्यवहार परिवार के सदस्यों जैसा है। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षा समाज के लिए है शिक्षा शासन तंत्र की ज़िम्मेदारी भर नहीं समाज की ज़रूरत और भावनाओं से जुड़ा मामला है। वह पूर्ण और समग्र व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया है। शिक्षा का काम विशेषज्ञ तैयार करना नहीं बल्कि एक उत्तरदायी सामाजिक नागरिक तैयार करना है। वर्तमान शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती है बदलाव के लिए बेचैन भारत की आत्मा समझना और समझा पाना। सबसे बड़ा मूल्यबोध मानस परिवर्तन करने वाले पाठ्यक्रम को लागू करना होगा। क्या हमारे पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को समाज के प्रति उनकी ज़िम्मेदारियों का ज्ञान कराते हैं?

Chapters- PS-July2016.indd 30 22-08-2017 AM 10:01:00